<u>ग्रामीण स्त्रियों में वंचना के उदीयमान आयाम : उत्तर प्रदेश के दो ग्रामों का एक विश्लेषण</u>

राधा प्रजापति एवं मंजू रावत, शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

भारत में निर्धनता के सन्दर्भ में अनेक विद्वानों ने मत प्रस्तुत किए और निर्धनता की व्याख्या करने का प्रयास किया है, लेकिन निर्धनता की व्याख्या में महिलाएं किस प्रकार निर्धनता के जाल में फसी है? ग्रामीण स्त्रियों में गरीबी के पुर्नउत्पादन के सामाजिक कारक क्या हैξ इस विषय पर विश्लेषण की कमी हैं। उत्तर प्रदेश में गरीबो की संख्या अधिक होने के कारण स्त्रियों की गरीबी है। गरीबी में स्त्रियों का प्रतिशत भी ज्यादा है। गाँव में गरीब स्त्रियॅा किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत कर रही है? किन–किन कारणों से वह गरीब बनी रहती हैं? वह क्यो गरीबी से निकलने का प्रयास नही करती हैं? इस प्रकार के प्रासंगिक प्रश्नों को उठाना ही इस शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों का समाकलन प्राथमिक स्त्रोतों द्वारा किया गया हैं। इस अध्ययन में लखनऊ जिले के दो गावों (इचवलिया एवं बाजपूर) की सभी गरीब स्त्रियों के मध्य जाकर अवलोकन किया गया है और साथ में द्वैतीयक स्त्रोतो से भी आकड़ों का संग्रहण किया गया है। भारतीय ग्रामीण महिलाओं की प्रकृति ही ऐसी होती है कि वह स्थिति के अनुकूल अपने आपको ढाल ही लेती है अवलोकन से भी कुछ ऐसे ही तथ्य उजागर हुए है ग्रामीण स्त्रियों में से लगभग 60ः महिलाएॅ गरीबी के दलदल को ही अपनी वास्तविक छवी स्वीकार कर उसी में जीवन व्यतीत करना चाहती हैं। वे गरीबी से निकलने का प्रयास भी नही करती हैं। कुछ में साक्षरता व जागरूकता का पूर्ण अभाव इसका प्रमुख कारण कहा जा सकता हैं। अधिकांश महिलाओं को विभिन्न योजनाओं (कामगार दुर्घटना मुआवजा, प्रसूति सुविधा अधिनियम 1961, महिला विकास विभाग (स्टेप) आदि) के बारे में अधकचरी सूचना ही प्राप्त होती है। अच्छी खासी संख्या में स्त्रियॅा भी परिवार कि मुखिया भी है या तो पुरूष छोड़कर चले गये है या फिर मृत्यु हो गयी है, ये भी उनकी वंचना का एक कारण हैं। इस अध्ययन का यह निष्कर्ष है कि वंचित स्त्रियों में वंचना से बाहर आने की क्षमता नही होती हैं इसलिए वह वंचित जीवन जीने को बाध्य हो जाती है।

ज्पजसम वि ।इेजतंबज रू इंटरनेट उपयोगकर्ता विद्यार्थीयों का एक समाजषास्त्रीय अध्ययन

;भोपाल नगर के विषेष संदर्भ मेंद्ध

छंउम ंदक ।ककतमेरू साधना सिंह, शोध छात्रा, समाजषास्त्र विभाग, बरकलउल्ला

विष्वविद्यालय भोपाल, मध्य–प्रदेष।

संक्षेप; ।इेजतंबजद्ध

'इंटरनेट उपयोगकर्ता विद्यार्थीयों का एक समाजषास्त्रीय अध्ययन

;भोपाल नगर के विषेष संदर्भ मेंद्ध'

प्रस्तुत शोध–पत्र भोपाल नगर में इंटरनेट का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों से संबंधित हैं। इस शोध पत्र को प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में इंटरनेट के प्रयोग से संबंधित प्रमुख अध्ययनों की समीक्षा की गई है तथा इसके माध्यम से इंटरनेट के उपयोग व समाज में पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित कुछ प्रष्नों को सामने लाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र के द्वितीय भाग में भोपाल नगर के महाविद्यालयों तथा विष्वविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के परम्परागत संबंध तथा सामाजिक गतिषीलता से संबंधित कुछ प्रष्नों को इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है। शोध–पत्र के तृतीय भाग में कुछ प्रमुख निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित कुछ प्रष्न इस प्रकार से है। इंटरनेट उपयोगकर्ता विद्यार्थी किस–किस धर्म और स्थान के रहे है ? क्या इंटरनेट उपयोगकर्ता विद्यार्थी कम्प्यूटर से संबंधित किसी मैग्जीन/पत्रिका को पढ़ते रहे हैं ? यदि हॉ तो क्या ये पत्रिका उनके कम्प्यूटर से संबंधित जानकारी के वृद्धि में सहायक रही हैं ? इंटरनेट उपयोगकर्ता विद्यार्थियों का इंटरनेट का उपयोग करने के लिए किसने सलाह दी ? क्या इंटरनेट उपयोगकर्ता इंटरनेट के माध्यम से अपने शैक्षिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम रहे हैं ? प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकन तथा साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग करते हुए तथ्यों को प्रस्तुत करने का एक प्रयास किया गया है। भोपाल नगर को प्रमुख रूप से दो भागों में नया भोपाल तथा पुराना भोपाल में विभाजित किया जा सकता है। हमने अपने शोध में इन दोनो क्षेत्रों के प्रमुख इंटरनेट कैफे जाकर महाविद्यालय तथा विष्वविद्यालय में अध्ययनरत ;दत्र300द्ध उत्तरदाता विद्यार्थियों का अध्ययन किया है। हमारे शोध–पत्र का प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार से हैं। इंटरनेट के उपयोग से राष्ट्र के आर्थिक विकास में पहले की अपेक्षा तेजी आई है। इंटरनेट उपयोगकर्ता विद्यार्थी इंटरनेट का उपयोग पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के लिए भी करते हैं। इंटरनेट उपयोगकर्ता विद्यार्थियों का इंटरनेट उपयोग के कारण उनके व्यवहार में परिवर्तन आया है।

बुन्देलखण्ड की आदिवासी महिलाओं में शिक्षा का स्वरूप

सारांश (।इेजतंबज)

डॉ0 सुनीता श्रीवास्तव
सहायक आचार्या
समाजशास्त्र विभाग
ज0रा0वि0वि0 चित्रकूट, (उ0प्र0)
म्उंपसे.नदममजंरपरतीन/हउंपसण्बवउ

''स्त्री का कोई वर्ग नही होता है, विश्व की आधी आबादी वर्ग विहीन है, स्त्री के वर्ग का निर्धारण पुरूष के वर्ग से होता है।'' —मार्क्स ने कहा

नारी की प्रकृति के रूप में और पुरूष को संस्कृति के रूप में चित्रित किया जा रहा है। जब हम विकास की बात करते हैं तो पाते हैं कि दुनिया का आधा हिस्सा अब भी विकास के लाभ से वंचित वर्ग, बहिष्कृत समूह, अनुसूचित जाति तथा जनजाति और महिलाओं के रूप में की जाती है। मनुष्य का सम्पूर्ण विकास तभी हो सकता है। जब वह शिक्षा का उद्देश्य जानेगा। वैश्वीकरण के इस युग में अगर शिक्षा व्यक्ति को अंधविश्वासी और संकीर्ण बनाती है, तो वह एकांकी और अपूर्ण है। अगर भारत को सही मायने में एक लोकतांत्रिक और समृद्ध समाज बनाना है तो शिक्षा ऐसी होना चाहिए जो सामाजिक भेदभाव कम करे, व्यक्ति को संकीर्णता से मुक्त करे और समता के साथ भाई—चारे का विकास करे। वह दलित स्त्री और आदिवासी जैसे समाज के वंचित और उपेक्षित वर्गों को समर्थ बनाए। और उनके प्रति समाज में स्वीकार्यता पैदा करे। सामान्य रूप से आदिवासी महिलाओं का विकास भारत में जिस तरह से हो रहा है। इसमें यह पता चलता है कि वे अपने विकास के प्रति जागरूप हो रहे हैं क्योंकि सन् 2001 से 2011 तक 10 साल तके अन्तराल में आदिवासी महिलायें शिक्षा के प्रति ज्यादा जागरूक हो रही है। तथा उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो रहा है। वर्तमान समय में सरकार भी इन लोगों तथा महिलाओं के शिक्षा का स्तर उच्च करने और समानता लाने के लिए अथक प्रयास कर रही है। लेकिन क्या वास्तव में लोग शिक्षित हो रहे हैं। आदिवासी लोग लडकों को शिक्षा देने के बारे में सोचता है लेकिन लडकियों को शिक्षा नाम मात्र की दी जाती है। साथ ही महिलाओं में शिक्षा का स्तर कम मात्रा में पाया जाता है। उनकी आर्थिक स्थिति

इतनी उच्च नहीं है कि वे स्कूल या कालेज में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेज सके। भारत के कुछ ऐसे राज्य है जहां पर इन आदिवासी समाजों का समूह है। उनमें बुन्देलखण्ड भी एक ऐसा जगह है जहां पर ये जाति रहती है।

प्रस्तुत प्रपत्र में ''बुन्देलखण्ड की आदिवासी महिलाओं में शिक्षा का स्वरूप'' इनमें 100 महिलाओं का अध्ययन किया गया है। वर्तमान समय में जिस तरह से उपभोक्तावाद, पूंजीवाद, समाज में समानता, बाजारीकरण, वैश्वीकरण सम्पूर्ण समाज में व्याप्त हो रहा है। प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री, समाजशास्त्री, 'माइकल फोकाल्ट' का मानना है कि ज्ञान ही शक्ति है, जिसकें पास ज्ञान है उसके पास शासन करने की शक्ति है तो ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि आने वाले समय में जिसके पास ज्ञान होगा उसके पास समृधता होगी। आधुनिक समाज की इस अंधाधुंध दौड़ में खासतौर पर आदिवासी महिलाओं को शिक्षा तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है, जिससे वे समाज में समानता और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सके और आने वाले समाज का पुनर्निमाण कर सके।